ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2017

REVIEW OF RESEARCH

व्यापार एवं मानव-स्वास्थ्य

डॉ.धर्मेन्द्र कुमार
महामाया राजकीय महाविद्यालय , श्रावस्ती

प्रस्तावना :

जगत्-स्रष्टा के द्वारा कल्पित,सृजित सकल ब्रह्माण्ड में मानव -निर्माण सर्वथा अद्वितीय,अनुपम या अनुपमेय कृति है।आध्यात्मिक दृष्टि से चिन्तन व विचार करने पर यह तथ्य असंदिग्ध रूप से निर्विवाद है कि एक मानव दूसरे मानव से कदापि कथमपि भिन्न अथवा अलग नहीं है,समस्त मानवीय जन एक है परन्तु कृत्रिम रूप से या भौतिक रूप से निर्मित लोक पद्धति या व्यवस्था में एक मानव दूसरे मानव से कई स्तरों पर चाहे वह – सांस्कृतिक स्तर हो,आर्थिक अथवा लोक का कोई और चरण हों। पग-पग पर भौतिक अन्तर दृष्टिपथ पर परिलक्षित ही होता है,इसमें कोई दो राय या मत नहीं है।वास्तव में यह श्रेणीकरण या वर्गीकरण सही अर्थों में काल्पनिक है।यह बात जरूर है कि प्रत्येक व्यक्ति भौतिक रूप से अर्जित अपने गुण-धर्म,संस्कार परिदृश्य,कला-कौशल आदि के कारण एक दूसरे से आभासिक रूप से भिन्न-भिन्न भी होता है।

उपर्युक्त के आलोक में जो मेरा मीमांसीय,विचारणीय व चिन्तनीय पहलू या प्रकरण है वह है- 'व्यापार व मानव स्वास्थ्य'। परम् पिता परमेश्वर ने अपवादों को छोड़कर,सबका अंग-प्रत्यंग एक समान बनाया है,रंगों को छोड़कर आन्तरिक संरचना सदृश है।परन्तु दुर्भाग्यवशात् लालची मानव लोभ के वशीभूत होकर मानव स्वास्थ्य के साथ,प्रकारान्तर से स्वयं के साथ खिलवाड़ कर रहा है। अपने स्वार्थ में वह इतना अंधा,बहरा,लंगड़ा हो गया है कि इसका निर्णय भी नहीं कर पा रहा है कि उसके साथ ही उसका परिवार भी गलत वस्तुओं व सेवाओं की जद व हद में आ रहा है। समग्र मानव का स्वास्थ्य आज जिस विषम परिस्थिति में पड़ता जा रहा है,इसका तनिक भी आभास लोभी मानव नहीं लगा पा रहा है। आज जिस तरीके से व्यापारवाद,वाणिज्यवाद मानव स्वास्थ्य के साथ दुष्प्रभाव की अनन्त,असीम श्रृंखला जोड़ते जा रहे है कि गला काट प्रतिस्पर्धा के युग में केवल धन ही सर्वस्व होता जा रहा है कि इसके आगे सब बौनी पड़ती जा रही हैं।

जनसंसाधन या मानव संसाधन किसी भी राष्ट्र की सर्वाधिक मजबूत और उपयोगी कड़ी होती है,जिस प्रकार लोहे की कड़ी एक दूसरी कड़ी से मिलकर,श्रृंखलाबद्ध होकर एक मजबूत व्यवस्था बनाती है ठीक उसी प्रकार एक जन दूसरे जन के साथ जुड़कर या मिलकर एक मजबूत व टिकाऊ राष्ट्र का निर्माण करते हैं। यहाँ तक की एक एक तिनके का भी राष्ट्रीय योगदान होता है। परन्तु इस स्थल पर दु:खद व चिन्ताजनक पहलू यह है कि बदलते परिदृश्य गलत व्यापारिक व आर्थिक नीतियों के कारण जनसंसाधन को खोखला बनाने व सर्वप्रकारेण सक्षम देश को विखण्डित करने का अन्यायपूर्ण,अमर्यादित,अनैतिक व त्रुटिपूर्ण खेल खेला जा रहा है जो वास्तव में शून्य सहिष्णुता के परिध्यान्तर्गत आता है,जिस पर जनमानस व प्रतिनिधि सरकारों का ध्यान तत्काल अपेक्षित है,तभी समयान्तर्गत राष्ट्र को वास्तविक क्षति से

बचाया जा सकेगा। यद्यपि प्रस्तुत विवेच्य,प्रतिपाद्य विषय सद्य:बहुत कम ध्यानाकर्षण करेगा तथापि उसका दूरगामी व सामयिक महत्त्व है।

हमारे देश भारत में बहुत से, विविध क्षेत्रों के उत्पाद हैं, कुछ निम्न स्तर के,सर्वथा घटिया तो कुछ उत्पाद,उच्च स्तर के,परन्तु इन उत्पादों में प्रत्यक्ष रूप से जो मानव-स्वास्थ्य से जुड़े हैं,उन उत्पादों पर ही ध्यान केन्द्रित करना ही हमारा बृहत्तर मंतव्य है।

किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के सशक्तिकरण का आधार सही मायनें 'स्वास्थ्य अर्थव्यवस्था' ही होती है।जहाँ के नागरिक जितने सेहतमंद होंगे वह राष्ट्र उतना ही समृद्ध होता है।सरकारें भी अपनी लोकोपकारी व जनहितकारी पद्धति का अनुसरण करकर ही चलती हैं और करना उपयुक्त व समीचीन भी होता है,परन्तु दुर्भाग्य से जब गलत व्यापारिक विचारधारा की प्रबलता और उसका प्रत्यक्ष व्यवस्थापन हो जाता है तो सारी की सारी व्यवस्था धराशायी होने लगती है।

आज हमारे देश में जन स्वास्थ्य निरन्तर गिरता जा रहा है,सरकारें जितनें भी यत्न-प्रयत्न कर रही है, सब निष्फल व निरुपाय होते जा रहे हैं। अभी हाल ही में उत्तर – प्रदेश के गोरखपुर जिलें में विसंगतियों आदि के कारण ३० से अधिक बच्चे असमय काल-कवलित हो गये?आखिर ऐसा क्यों है?कौन इसके लिए जिम्मेदार हैं?क्या हाथ पर हाथ धरें बैठना ही इसका उपाय है?तो इसका एक स्वर में उत्तर होगा नहीं। कारण की तह में हमें जाना ही पड़ेगा ।

कारण स्पष्ट है,मुख्यतया खाद्य,दवाओं आदि पदार्थों में मिलावट,अपशिष्टीकरण -अनावश्यक थोड़े से लाभ- के लिए जन,धन हानि कर रहा है ,जो कि नितान्त अनुचित,अन्यायाधारित,अधार्मिक,अस्वास्थ्यकर और अन्ततः अमानवीय पद्धति है,सीधे अर्थों में कहा जाय तो राक्षसी प्रवृत्ति या दानवी प्रवृत्ति है जो वस्तुतः भस्मासुरी प्रवृत्ति का ही पोषक,परिचायक व ज्ञापक हैं।आज रातोंरात अरबपति बनने के चक्र में इस विधा से जुड़ें हुए लोग,साजिश व कुचक्र करते हुए मानव स्वास्थ्य को कमजोर करते हुएविनष्ट करने पर तुले हुए हैं।

प्रस्तुत विवेच्य स्थल पर बहुत से सेवनीय या खाद्य पदार्थ हैं परन्तु बहुत से खाद्य पदार्थों का उदाहरण न देते हुए हम मात्र दैनिक प्रयोग में आने वाले व हर घर में प्रयोग में आने वाले सरसों का तेल व रिफाइण्ड तेल का ही उदाहरण देंगे।सरसों तेल के ब्राण्ड में हम मुख्य रूप से दो ब्राण्ड 1-चक्र और 2-बैलकोल्हू ।

रिफाइण्ड तेल में मुख्यरूप से दो ब्राण्ड 1-सफोला 2-फार्च्युन-का उदाहरण देंगे। दो लीटर के पैक में इनके दाम क्रमशः इस प्रकार हैं-

1-चक्र 160 रुपये
2- बैलकोल्हू 260 रुपये
3-फार्च्यून 160 रुपये
4-सफोला 300 रुपये

इसके सन्दर्भ में मात्र इतना कहना है कि जब ये खाद्य पदार्थ ही हैं,इन सबका एक ही प्रयोजन है?तो इनके दाम में आकाश-पाताल का अन्तर क्यों?क्या राजा और रंक के आन्तरिक अवयवों में असमानता है क्या? क्या अमीर और गरीब के मृत्यु का निर्धारण दो मानकों से होता है? इन सबका उत्तर स्पष्ट है कि सामानों की गुणवत्ता में काफी अन्तर है तभी मूल्यों में भारी अन्तर है,इसको ठण्डे दिमाग से समझना होगा। जब दोनों का प्रयोग मानवमात्र के लिए ही है तो उनके गुणवत्ता व मूल्यों में इतना फर्क न्यायोचित,मानवोचित व धर्मतः विरुद्ध है।

ऐसे संवेदनशील स्थल पर केन्द्र व राज्य सरकारों से निवेदन है कि क्यों नहीं कोई गतिशील,सक्षम,सशक्त,कानून से युक्त कोई तंत्र,निकाय,समिति,आयोग आदि का चयन या मनोनयन होता कि कम से कम मानव स्वास्थ्य को लेकर कोई लोभी हिमाकत तो न कर सकें। अन्यथा कि परिणाम यह होगा कि धीरे-धीरे समग्र देश बीमारग्रस्त हो जायेगा फलतः चिकित्सीय तंत्र ही निष्फल व लाचार हो जायेगा। हाँ हमारा यह मानना है कि व्यक्ति व्यक्ति के क्रय शक्ति,आय-व्यय आदि में विभिन्नता होती है परन्तु जब बात प्रत्यक्ष रूप से मानव-स्वास्थ्य से जुड़ा हो तब ऐसी उपेक्षा,उदासीनता

या लापरवाही कदापि,कथमपि क्षम्य या उपेक्षणीय नहीं है। वैसे भी भारत के संविधान के दो अनुच्छेद 14-अवसर की समता ,अनुच्छेद 21- प्राण और दैहिक स्वतंत्रता की गारण्टी सर्वसामान्य को मिली है और यह जानबूझकर मिलावटी प्रवृत्ति उस अधिकार का अतिचार व उल्लंघन है।

उपर्युक्त के आलोक में मिलावटखोरों से यह विनती है कि कानून के डर से नहीं तो नैतिकता के डर से ही सर्वग्रासी यह प्रथा बन्द कीजिए। इस क्रम में साररूप से उद्योग जगत,मीडिया जगत,कार्यपालिका,न्यायपालिका,विधायिका आदि से यह प्रार्थना है कि इस ज्वलन्त प्रकरण पर व्यापक कार्रवाई करते हुए मानव स्वास्थ्य की संरक्षा व सुरक्षा को प्राथमिकता प्रदान करें।

शोध सहायक सूची:-

1-अमर उजाला दैनिक समाचार पत्र
2-दैनिक जागरण समाचार पत्र
3-हिन्दुस्तान समाचार पत्र
4-hindustantimes
5-स्वयांनुभव एवं स्वयं प्रेक्षण